Vol 4 Issue 8 Feb 2015 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume-4 | Issue-8 | Feb-2015
Available online at www.aygrt.isrj.org

यशपाल की कहानियों का कलागत अध्ययन

भागीरथ

सहायक प्राध्यापक–हिन्दी विभाग शाह सतनाम जी छात्र महाविद्यालय, सिरसा (हरियाणा)

सांराश : कहानियों के कलागत अध्ययन के अन्तर्गत वे सभी तत्व सम्मिलित रहते है, जिसके द्वारा कहानीकार अपने व्यक्तित्व और रचना–कौशल से ऐसी सृष्टि करता है जिसको पाठकों के सामने प्रस्तुत किया जा सके। अपने भावों और विचारों को प्रकट करने के लिए कहानीकार कथावस्तु का गठन, पात्रों की सृष्टि, भावोत्कर्षण भाषा, कथोपकथन और देशकाल के अनुसार वातावरण की सृष्टि करता है। वस्तु, पात्र और अभिव्यंजना–शैली की दृष्टि से यशपाल की कहानयिों का कलागत अध्ययन हिन्दी कहानी साहित्य में एक महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। "कला के विभिन्न तत्वों अथवा उपकरणों की योजना का वह विधान, वह ढंग जिससे कलाकार की अनुमति अमूर्त से मूर्त हो जाये।" [1]

प्रस्तावना :

"यशपाल की कहानियों के कथनक पर दृष्टिपात करे तो उनकी कहानियाँ कथानक प्रधान है। उन्होंने रोचक ढंग से घटनाओं को प्रस्तुत करने की सफलता को ही कला की सफलता मान लिया है।" [2]

इसी कारण रोचक घटनाओं का चयन करने की प्रवृति उन पर हावी रही है। शैली के स्वरूप की दृष्टि से इनकी कहानियों में विभिन्न शैलियों का मिश्रण है। कथात्मक शैली, आत्म चरितात्मक शैली, मार्मिक शैली, नाटकीय शैली तथा व्यंग्यात्मक शैली का सहज और सफल प्रयोग यशपाल की कहानियों में हुआ है। इनकी कहानियों में नाटकीय शैली का भी समावेश है। गुड बाई, दर्द दिल, मनुष्य, पांव तले की डाल आदि कहानियों में नाटकीयता के अंश महत्वपूर्ण है। यशपाल के व्यक्तित्व और उनके नाटकीय शैली प्रयोगों का प्रत्यक्ष प्रभाव इनकी कुछ कहानियों में सर्वत्र दृष्टिगत होता है। पात्र और चरित्र की दृष्टि से इनकी कहानियां उच्चकोटि की हैं। "समाज के व्यापक धरातल पर विचरण करने वाले साधारण और असाधारण मानव की कहानी के सीमित परिवेश में पात्र के रूप में प्रेवश करते है। ये ही पात्र काहनीकार की कल्पना और अनुभूति के संयोग से जन–जीवन से सम्बन्धित समस्याओं का उद्घाटन करते है।"[3] पर्दे के दिन, कोयले वाली, आफिस गर्ल, दफतर के बाबू, बड़े वकील साहब, डिप्टी साहब आदि कहानियों में सामाजिक परिवेश को उभारा है। कहानीकार ने उच्च, मध्य और निम्न तीनों वर्गों के विभिन्न प्रवृत्ति के पात्रों को लिया है। इनकी कहानियों में सबसे अधिक मध्यवर्गीय पात्र है। 'चार आने' कहानी का ईशाद ,[4] 'लखनऊ वाले' कहानी के जफर मियां [5] झुठी शान दिखाने की प्रवृत्ति से ग्रस्त हैं।

यशपाल की अनेक कहानियां पहाड़ी प्रवेश से सम्बन्धित हैं। इन कहानियों में स्थानानुसार पहाड़ी, कश्मीरी, लद्दाखी आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हुआ हैं। भस्मावृत्त, चिंगारी, धर्मयुद्ध, दीनता का प्रायश्चित, न्याय और दण्ड, तुफान का दैत्य, वो दुनियां आदि कहानियों में पहाड़ी भाषा के शब्दों का वर्णन हुआ है। पहाड़ी जीवन की कहानियों में पहाड़ी हिन्दी के अतिरिक्त कश्मीरी भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ है। तुफान का दैत्य कहानी में 'समावार' (चाय पकाने का बर्तन) [6] 'सार' (बैल बांधने का छपपर) [7] आदि लद्दाखी के शब्द 'चेले' (पुरोहित) [8] 'डायन' कहानी में प्रयुक्त हुआ हैं।

पंजाब में प्रारंम्भिक जीवन व्यतीत करने के कारण पंजाबी भाषा के शब्दों का उनकी कहानियों में आ जाना असम्भाविक नहीं है। पंजाबी पात्रों के मुख से पंजाबी शब्दों का प्रयोग करके कहानीकार ने अपने पंजाबी भाषा ज्ञान का परिचय दिया है। उर्दू भाषा के शब्दों का विवेचन इनकी कहानियों में भी किया गया है। दरअसल भाषा विशेष को धर्म से जोड़ लेने के कारण मुस्लिम व्यक्ति उर्दू को अपने धर्म भाषा मानकर प्रयोग करते हैं। वो दुनिया, शहनशाह का न्याय, चित्र का शीर्षक, अभिशप्त जैसी कहानियां उर्दू शब्दावली लिए हुए हैं। 'शहनशाह का न्याय' कहानी में डिंडोरची डिंढौरा पिटते हुए कहता हैं– "ललक खुदा का, मुलक बादशाह का।" [9] उर्दू के साथ–साथ फारसी के वाक्य भी कहीं–कहीं प्रयुक्त हुए है। 'करवा का व्रत' कहानी में "गुर्वा वर अव्वल कुरतन" [10] वाक्य का प्रयोग हुआ है।

यशपाल की कहानियां कलात्मक की दृष्टि से उच्च कोटि की मानी जाती है। अंग्रेजी भाषा का पुट भी इनकी कहानियों में मिलता है। अंग्रेजी भाषा जानने से सम्मान में वृद्धि होने की बात सोचकर 'काला आदमी' का शेख अंग्रेजी ही बोलने का प्रयत्न करता

है।[11] उपदेश कहानी की अंग्रेजी वेश्या भी कहती है– "आई डु इट इन नीड एण्ड यू डु हट फार फन।"[12] 'शर्त' कहानी का सन्तु भी "देअर इज नयिंक गुड ओर बैड, ओन्ली थिन्यींग मेक इट सो"[13] कहकर अपनी पराजय पर खुश होता है।

आलोच्य कहानी ने अलंकारों का सहज प्रयोग अपनी कहानियों में किया है। कहानीकार ने "सच बोलने की भूल" कहानी संग्रह की भूमिका में दृष्टान्त द्वारा प्रस्तुती के बारे में लिखा है– "दृष्टान्त कहानी का मेरूदण्ड है।"[14] दृष्टान्त में प्रस्तुत और अप्रस्तुत में बिम्ब–प्रतिबिम्ब का भाव विद्यमान होता है। 'परलोक' कहानी दृष्टान्त द्वारा प्रस्तुती के सन्दर्भ में दृष्टव्य है। आलोच्य कहानी में प्रस्तुत द्वारा अप्रस्तुत की अभिव्यक्ति की गई है। इन्होंने लिखा है– "कहानी कला दृष्टान्त द्वारा विचारों की अभिव्यक्ति है।"[15] आलोच्य कहानीकार ने अपनी कहानियों में अपनी भाषा को पात्रानुकूल बनाकर रखा है। पात्रानुकूलता से परिपूर्ण इनकी कहानियों की प्रमुख विशेषता है। 'दर्पण' कहानी में बालक किरण कहता है– "मौही का हीहा हम लैंगे।"[16] इनकी कहानियों में आम–आदमी के सरोकारों की उपस्थिति है। वे यथार्थवादी शैली के विशिष्ट रचनाकार है। सामाजिक विषमता, राजनैतिक पाखण्ड और रूढ़ियों के खिलाफ उनकी कहानियां मुखर है। अहिन्दी भाषी पात्र हिन्दी बोलते समय उसको विशिष्ट ढंग से परिवर्तित कर देते है। "उतमी की माँ" कहानी की मेम डाक्टरनी कहती है– "यह तुम्हारा लड़की को शादी मांगता है।"[17]

कहानीकार यशपाल की रचनाएं कलात्मक की दृष्टि से विविधता लिए हुए है। लेकिन इनकी कहानियां सामाजिक सरोकार में पूर्णत सफल हुई हे। इन्होंने अपनी भावपूर्ण शैली के द्वारा समाज के यथार्थ को प्रस्तुत किया है। अलंकारों की दृष्टि से इनकी कहानियां उच्च–कोटि की मानी जाती है। शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों का प्रयोग इनकी कहानियों में हुआ है। आत्मिक प्रेम, पराया–सुख ज्ञानदान कहानियों में अनुप्रांस अलंकार की छटा है। "आत्मिक–प्रेम" कहानी में कहानीकार ने लिखा है– "कदम्ब सिलय की कोमल छाया में।"[18] इस पंक्ति में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है। 'मक्रील' कहानी की नायिका की "बड़ी–बड़ी आंखों में मक्रील की उज्ज्वलता"[19] कहकर उपमा अलंकार का सहज प्रयोग किया गया है। 'उतमी की माँ' कहानी में उतमी के गोरे शरीर पर चेचक के दाग ऐसे लगते है "मानो बरसी हुई चांदनी की बून्दों के चिह्न बन गये है।"[20] इस पंक्ति में उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग हुआ है। 'रूपक' अलंकार का प्रयोग इनकी अनेक कहानियों में सहजता से किया गया है। 'तर्क का तुफान' कहानी में रूपक अलंकार का प्रयोग देखते ही बनता है। यथाः "गम के सिगरेट में मन को सुलगा दुख के कश खींचते हैं और आहां का धुआं छोड़ते है।"[21] अलंकार कहानी के सौन्दर्य–बोध को बढाने में सहायक होते हैं।

कहानीकार ने समाज के विभिन्न पहलुओं को कहानियों का आधार बनाया है। इनकी कुछ कहानियों में आत्मपरक शैली का उल्लेख मिलता है। मक्खी या मकड़ी, अपमान की लज्जा आदि कहानियों में आत्मपरक शैली का प्रयोग हुआ है। कहानी का मुख्य–पात्र स्वयं ही सम्पूर्ण कथा कहता है। एक राज, कुत्तें की पूंछ, पहाड़ की स्मृति परलोक, मनुष्य, विश्वास की बात, फुल की चोरी, शर्त, अपमान की लज्जा आदि कहानियों में आत्मचरित प्रधान शैली की विवेचना हुई है। इन कहानियों में कहानीकार ने स्वयं सम्पूर्ण कहानी की कथा कही है। 'मनुष्य' कहानी में कहानीकार ने हावड़ा स्टेशन से रेलगाड़ी में यात्रा करते समय एक संस्मरण को प्रस्तुत करने से पूर्व कहा है– "हावड़ा स्टेशन से कलकते के लिए सुबह–शाम थोड़े–थोड़े समय पर ट्रेनें आती–जाती रहती है। ऐसे ही एक लोकल के एक बिल्कुल खाली डिब्बे के एक कोने में अकेला बैठा मैं गाड़ी की चाल की ताल पर गुनगुनाता चला जा रहा था।"

कहानी में जब नाटकीयता आ जाती है तब कहानी का मज्जा ही कुछ अलग होता है। यशपाल की कहानियां नाटकीय शैली से मंडित है। होली का मजाक, उतरा नशा, मनुष्य जैसी कहानियां नाटकीयता से पूर्ण है। इनकी कहानियों में व्यग्यात्मक शैली के भी दर्शन होते है। कहानीकार ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष से व्यंग्यात्मक शैली को अपनाया है। फूलों का कुर्ता, पांव तले की डाल, परलोक आदि कहानियों में प्रत्यक्ष व्यंग्य प्रधान शैली का प्रयोग किया जबकि अभिशप्त, महादान, वो दुनिया, खच्चर और आदमी, पतिव्रता आदि अनेक कहानियों में अप्रत्यक्ष व्यंग्य प्रधान शैली अपनायी गई है।

समीक्षा

प्रगतिवादी कथाकारों में यशपाल का महत्वपूर्ण स्थान है। मार्क्सवादी चेतना से अनुप्रमाणित होकर इन्होंने अनेक कहानियों की रचना की है। वर्ग–संघर्ष, शोषण, समाजिक एवं नैतिक रूढियों पर आक्रोश उनकी कहानियों के विषय रहे है। इनकी कहानियों का कलागत अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इनकी कहानियों में भाषा का विकास तो अवश्य हुआ, परन्तु शिल्प के अन्य तत्वों में कोई विकास नहीं हुआ। इनके कथा–शिल्प पर टिप्पणी करते हुए– डॉ0 भगवत स्वरूप मिश्र ने लिखा है– "कथा–शिल्प और कथ्य की दृष्टि से यशपाल जी प्रेमचन्द के बहुत नजदीक हैं, पर वे अपनी कहानी को प्रेमचन्द की तरह समस्या का समाधान देने वाले किसी आदर्श बिन्दु पर नहीं पहुंचाते, अपितु यथार्थ की कठोरता के तीखे व्यंग्य का बोध भर करा देता है।"

1.डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल– हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास, पृ. 2
2.भूमिका, धर्मयुद्ध, पृ. 5
3.डॉ0 सरोज गुप्त : व्यक्तित्व और कृतित्व, पृ. 205–206
4.चार आने, पृ. 82
5.लखनऊ वाले, पृ. 112
6.तुफान का दैत्य, पृ. 62
7.तुफान का दैत्य, पृ. 62

8.डायन, पृ. 80
9.शहनशाह का न्याय, पृ. 53
10.करवा का व्रत, पृ. 80
11.काला आदमी, पृ. 28
12.उपदेश, पृ. 34
13.शर्त, पृ. 91
14.सच बोलने की भूल, की भूमिका के सन्दर्भ में
15.भूमिका, सच बोलने की भूल
16.दर्पण, पृ. 126
17.उतमी की माँ, पृ. 27
18.आत्मिक–प्रेम, पृ. 74
19.मक्रील, पृ. 11
20. उतमी की माँ,पृ. 09
21..तर्क का तुफान, पृ. 33
22.मनुष्य, पृ. 200

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org